स्मारिका

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन 2023

पर्यावरण की चुनौतियाँ

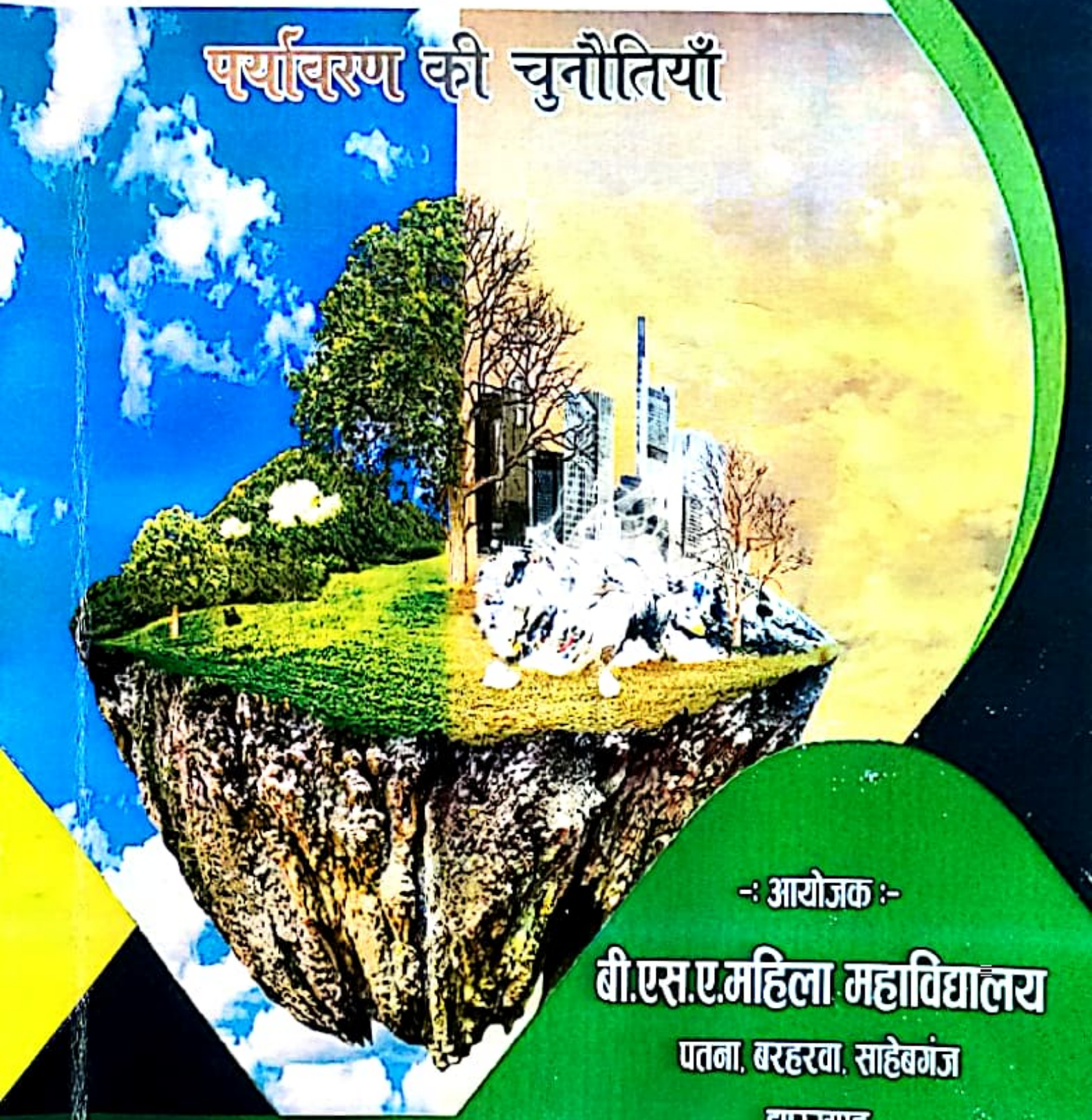

-: आयोजक :-

बी.एस.ए.महिला महाविद्यालय

पतना, बरहरवा, साहेबगंज

झारखण्ड

प्रिय डा० झा

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि आप बी० एस० ए० महिला महाविद्यालय, पतना, बरहरवा, साहेबगंज में आगामी 30–31 जुलाई, 2023 को अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन का आयोजन कर रहे हैं। इस अवसर पर आप एक स्मारिका का भी प्रकाशन कर रहे हैं जिसमें देश के ख्यातनामा पर्यावरणविदों व विशेषज्ञों के सारगर्भित लेख समाहित कर रहे हैं।

मैं पर्यावरण सम्मेलन की सफलता और स्मारिका के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूं।

सद्भावनाओं सहित.....

विमल प्रसाद सिंह

(प्रो० डॉ० विमल प्रसाद सिंह)
कुलपति
सिदो–कान्हू विश्वविद्यालय,दुमका

आयोजक की कलम से ....

"जाकर गंगा से जल ले आना , गंगा जल एवं तुलसी दल अंत समय में मेरे मुँह में देना" - यह एक रुग्ण पिता की पुत्र से गुहार थी।

मैं प्रकाश चाचा की ओर देख रहा था। मन में गंगा जल एवं तुलसी दल की व्यंजना जागृत हुई। सोचा शायद गंगा नदी प्रदुषित न होती – पर्यावरण के प्रति यहीं से एक एक विचार उठा।

पिछले राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन महाविद्यालय में होना था। कुलपति महोदया सोनाझरिया मिंज को आमंत्रित करने गया था। आते समय स्पष्ट था किसी कारणवश समय नहीं दैंगी। मन टुटा सा था। साथ में डा० युगल झा जी भी थे। उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सेमिनार का सिलसिला शुरू करने को कहा। एवं डॉ जितेन्द्र नागर (ESDA के सदस्य) का वाट्सएप नंबर उपलब्ध करा दिए। यहीं से मेरी इच्छा बलवती होती गई।

इसी क्रम में श्री ज्ञानेन्द्र राउत जी का दैवदूत के रूप में मुझे सानिध्य प्राप्त हुआ फिर पद्मश्री राजा लक्ष्मण जी, श्री पुष्पेन्द्र सिंह जी, डॉ दिनेश मिश्र जी, डॉ. जगदीश चौधरी जी, डॉ. अनुभा पुंढीर जी, श्री पंकज चतुर्वेदी जी के आगमन की तिथि तय हुई।

फिर एक बार डॉ. युगलेश्वर झा जी के साथ कुलपति महोदय माननीय डॉ. विमल प्रसाद सिंह जी से सेमिनार में भाग लेने का आग्रह करने पहुँचा । कुलपति महोदय ने सहर्ष आमंत्रण स्वीकार किए एवं सम्मेलन को "अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन" नाम देने का आदेश मिला। साथ ही अन्य निर्देश भी हुआ।

इन्ही का साक्षात्कार अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन के रूप में प्रस्तुत है एवं स्मारिका आपके कर कमलों में है।

कतिपय गलतियाँ संभव है , क्षमार्थी हूँ।

आपका

प्रो० भानुदेव प्रसाद सिंह
प्राचार्य
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना बरहरवा

संपादक की कलम से –

विश्व की प्राकृतिक संपदा मानवीय सभ्यता की महान धरोहर है । आज इसी भारतीय उपमहाद्विप में बसने वाली मानव सभ्यता एवं उनके चारो ओर स्थित पर्वत मालाएँ, वनों, नदियों, आहरों, तालाबों एवं तमाम जल सहचरी की धाराओं के साथ भारतीय जीवन संस्कृति की सदियों से जुड़ी धर्म एवं संस्कृति की महान व्याख्या और आरण्यक संस्कृति की इस पूजा परंपरा में मातृ भाव की विश्व संस्कृति किसी मानवीय संगठित संघर्ष के साथ–साथ गहरे साजिश के खिलाफ विश्व की जन सांख्यिकी चेतना का शंखनाद है।

भारतीय जीवन का संवाद, भारत की प्राचीन देशज संस्कृति की आदिवासियत को परिभाषित करता है, जहाँ प्रकृति की सत्ता अपनी काली चट्टानों में "मरांगबुरू" के आदेश पर धरती पुत्र भगवान बिरसा के "उलगुलान" के मंत्र का जाप कर हर जाहेरथान में वीर सिदो–कान्हू के "हूल" की प्रतिध्वनि को भारतीय धर्म संस्कृति और देशज राष्ट्रवाद की मुनादी समझता है। वस्तुतः मानव जीवन की विश्वधारा में भारत की प्राचीन धर्म संस्कृति उन देशज संस्कारों की गहरी अनुभूति है, जिसमें जल–जंगल–जमीन और पर्यावरण के साथ–साथ धर्म एवं जीवन संस्कृति की सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय विमर्श की आवश्यकता पर बल देता है। विश्व की पूरी की पूरी काया भारतीय स्मृतिकारों के लिए आरण्यक संस्कृति का संवाद ही नहीं है बल्कि भारतीय संविधान एवं शासन में संपूर्णतः प्रगतिवादी लोकनीति एवं अन्तयोदय की समाजवादी कार्य योजना एवं "पर्यावरणीय और परिस्थितीकि" पर गहरे चिंतन, नवोउन्मेष एवं नवाचार का सद्व्यवहार है । ऐसे ही सदप्रयासों के सुफल परिणाम की अंतिम परिणति के लिए बौद्धिक समाज विश्व की प्राकृतिक संपदा की संपूर्ण सुरक्षा एवं उसकी आवाजाही के लिए विचार–विमर्श, चिंतन एवं सृजन की आवश्यकता पर बल देता है। शताब्दियों से इन पहाड़ों एवं जंगलो को बचाने के लिए एवं धरती पर "ग्लोबल वार्मिंग" की घंटियों का एहसास कराने के लिए हमारा यह प्रयास है कि हम धरती के रिश्ते और माता की कोख की पीड़ा को समझने वाली महिलाओं की शहादत एवं संघर्ष की चर्चा कर वर्त्तमान पीढ़ी की कृतज्ञता ज्ञापित करें। ग्रामीण भारत की आम महिलाएँ जिनका बलिदान और संघर्ष पहाड़ों और पेड़ों के लिए इतिहास के पन्नों पर दर्ज है, हम सब के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। ऐसे नामों में राजस्थान के अमृता बाई, उत्तर प्रदेश की वाचो देवी एवं गौरा देवी एवं वर्त्तमान में झारखंड के परिदृश्य पर जल जंगल जमीन की सरोकारों पर संघर्ष करने वाली मुन्नी हांसदा, बासवी किरो एवं दयामनी बारला की चर्चा देश की हर जुबान पर है।

कभी पहाड़ों के सीने से सैकड़ों नदियाँ वर्षा के पानी को अपने साथ बहाकर लाती थी और देश की परंपरागत कृषि व्यवस्था को मजबूत आधार प्रदान करती थी। आज रसायन के कचड़े से बने उर्वरक एवं त्रुटीपूर्ण कृषि प्रबंधन एवं बड़े बांध की समस्याँ ने संम्पूर्ण देश की नगरीय संस्कृति को एवं गाँव की झोपड़ियों को नाले में तब्दील कर दिया है। शहरों एवं देहातों में उगे कंक्रिट जंगलों ने सबसे ज्यादा नुकसान इन छोटे–मोटे नदियों के लिये बने सोते का किया है। धाराओं के इस पदचिन्ह को मिटाने में सदियों से बहने वाली नदियों का अस्तित्व ही मिट गया है, जिसने वर्त्तमान मानवीय जीवन संस्कृति के जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया है। नदियों के मुहाने पर असंख्य जलराशि में बहकर आने वाली गाद से विशाल सागर में धरती के भूगोल के तापमान की स्थिति ही बदल गई है। वही प्लास्टिक और पोलिथिन के कचड़े ने महासागर में पशु, पक्षी एवं जलीय जीव की अस्मिता पर संकट पैदा कर दिया है। प्रदूषण और कार्बन के उत्सर्जन की समस्या

ने विश्व की ग्राम सभ्यता को बेमौसम बरसात के कारण बाढ़, सुखाड़ की बेचैनी में जलवायु परिवर्तन के खतरे को काफी बढ़ा दिया है। परिणाम स्वरूप विश्व की वसुंधरा आज अमन–चैन के बजाय "पिघलते ग्लैशियर" और "हिमयुग" की त्रासदी पर खड़ा है। आज देश और प्रदेश की चर्चित महिलाओं ने प्रकृति और पर्यावरण की ऐसी भयावह स्थिति को खतरे की घंटी बतलाया है, और इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी तंत्र को झकझोरा है एवं जन जागृति के लिए संघर्षरत रहे है।

ऐसे ही चर्चित हस्ताक्षरों में श्रीमति मेधा पाटेकर, श्रीमति मेनका गांधी एवं श्रीमति वंदना शिवा के प्रयासों की भूरी–भूरी प्रसंशा की जा सकती है। आरण्यक संस्कृति की इसी सभ्यता को बचाने के लिए शताब्दियों पूर्व जनजातियो का संघर्ष एवं संपूर्ण देश में वन संपदा की सुरक्षा के लिए ऐसे सैकड़ों आंदोलन हुए जिसमें वन–पर्यावरण की सुरक्षा के लिये "चिपको आंदोलन" भी शुमार है।

प्रस्तुत स्मारिका की सफलता के लिये एवं प्राकृतिक धरोहर की चुनौतियों पर अपने पदचाप से संघर्ष एवं प्रतिरोध की आवाज बनकर जिनलोगों ने भी माता की कोख की पीडा को जगजाहिर किया है, उनमें सामाजिक वैज्ञानिक श्री सुन्दर लाल बहुगुणा, श्री चंडी प्रसाद भट्ट, मेगसायसो पुरस्कार से सम्मानित जल पुरूष श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, "पर्यावरण प्रेरणा" के संरक्षक एवं जल योद्धा श्री रमेश गोयल, पद्मश्री श्री लक्ष्मण सिंह जी, पद्मश्री श्री उमाशंकर पांडे जी, पद्मश्री श्री अनिल प्रकाश जोशी एवं पद्मश्री श्री सतेन्द्र त्रिपाठी के सदप्रयासों एवं संघर्षों के साथ–साथ लिखे गये उनके आलेखों एवं उनकी शुभेच्छाओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

विगत 10 वर्षों से दिल्ली एवं दिल्ली से बाहर के विश्वविद्यालयों में पर्यावरण की चुनौतियों पर न सिर्फ आलेख पढ़ने का सौभाग्य इन संगोष्ठियों में हमे मिला है, बल्कि आमंत्रित सदस्य के रूप में इनलोगों ने मेरे सद्प्रयासों एवं लेखों की सराहना की है एवं मंच साझा कर सम्मानित करते हुए हमारी हौसलाफजाई की है। बहुचर्चित पत्रकार श्री पंकज चतुर्वेदी, बड़े बाँध की परियोजनाओं पर अपनी राय रखने वाले श्री दिनेश मिश्र, पर्यावरणीय संकट पर व्याख्यान देने वाले श्री ज्ञानेन्द्र राउत, बालाजी फाउन्डेशन के निदेशक श्री जगदीश चौधरी जी, तालाब एवं आहरों की सुरक्षा के लिये राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले श्री पुष्पेन्द्र भाई एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रवक्ता एवं पर्यावरणविद् डॉ0 जितेन्द्र नागर के शुभेच्छाओं एवं शुभकामनाओं के प्रति भी आमार व्यक्त करता हूँ।

झारखण्ड के महामहिम राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन एवं मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन तथा वर्त्तमान में सिदो–कान्हू विश्वविद्यालय के कुलपति आदरणीय प्रो0 डॉ0 विमल प्रसाद सिंह के प्रति अपनी दिल की गहराईयों से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जिनके सद्प्रयासों से यह पिछड़ा क्षेत्र का महिला महाविद्यालय आज अपनी पहचान की संकट से बाहर निकला है एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। संक्षेप में स्मारिका में उपलब्ध उन तमाम आलेखों की गुणवत्ता की प्रशंसा करता हूँ। आलेख एवं शोधपत्रों की प्रस्तुति काबिले तारीफ है। अतः सभी शोधपत्रों के शोधकर्ताओ, शिक्षकों, सामाजिक वैज्ञानिकों एवं समाजिक कार्यर्त्ताओं की विद्वतापूर्ण चिंतन एवं सृजन तथा वर्त्तमान संकट के समाधान हेतु दिये गये सुझावों को विनम्रता से स्वीकार करता हूँ। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 भानुदेव प्र0 सिंह जिन्होने अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के सांगठनिक सचिव के रूप में अपनी महती भूमिका अदा की है। बिना इनके सहयोग के इस संगोष्ठी का होना असंभव था। अतः इन्हे भी हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आशा ही नहीं,पूर्ण विश्वास है कि इस दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विचार मंथन की प्रक्रिया से निकली बुद्धीजीवियों एवं समाजिक वैज्ञानिकों के सुझाव को वर्त्तमान प्रशासन, झारखण्ड की सरकार एवं भारत सरकार की सेवा में अर्पित करने का मेरा प्रयास रहेगा।

सादर। धन्यवाद।

– युगलेश्वर

BHANUDEO PRASAD SINGH
Principal
BSA Mahila Mahavidyalaya
Pathna, Barharwa
SKM University, Dumka

Environment: Cultural Challenges and Solutions in India

India, with its rich cultural heritage and diverse traditions, faces unique challenges when it comes to environmental conservation. The country's rapid economic growth and burgeoning population have put immense pressure on its natural resources and ecosystems. However, by understanding and addressing the cultural challenges intertwined with environmental issues, India can develop sustainable solutions that align with its cultural values and traditions.

CULTURAL CHALLENGES

Attitudes and Beliefs: Traditional attitudes and beliefs in India often prioritize economic
growth and development over environmental conservation. The perception of nature as a resource to be exploited for human needs, coupled with a focus on immediate economic gains, can hinder efforts towards sustainability.

Sacred Sites and Rituals: India is home to numerous sacred sites, forests, rivers, and mountains that are revered by various religious and cultural communities. However, rapid urbanization, industrialization, and pollution have threatened these sites, leading to a clash between developmental aspirations and cultural values.

Consumption Patterns: The rising middle class and consumer culture in India have contributed to increased consumption and waste generation. The desire for material possessions, coupled with a lack of awareness about sustainable practices, poses a challenge to achieving a more environmentally conscious society.

SUSTAINABLE SOLUTIONS

Education and Awareness: Promoting environmental education and awareness programs that integrate traditional knowledge and cultural values can be a powerful tool for change. By highlighting the interdependence between nature and human well-being, individuals can be motivated to adopt sustainable practices and make informed choices.

Integration of Traditional Practices: Recognizing and integrating traditional ecological knowledge and practices into environmental management and conservation efforts can be beneficial. Indigenous communities and local practices often possess valuable insights into sustainable resource management, biodiversity conservation, and ecosystem restoration.

Community Engagement: Engaging communities at the grassroots level is crucial for successful environmental initiatives. Encouraging community-led conservation projects, involving local stakeholders, and empowering them to take ownership of their natural resources fosters a sense of responsibility and ensures the sustainability of conservation efforts. Policy and Legal Frameworks: Strengthening environmental policies and implementing robust legal frameworks is essential. These frameworks should consider cultural values, traditional practices, and the inclusion of indigenous communities in decision-making processes. Stricter regulations and enforcement mechanisms can help mitigate environmental degradation and promote sustainable practices.

Green Entrepreneurship and Innovation: Encouraging and supporting green

entrepreneurship and innovation can drive sustainable development in India. Promoting eco-friendly industries, renewable energy projects, and sustainable agriculture practices can create economic opportunities while preserving the environment.

CONCLUSION

India's cultural challenges and solutions in environmental conservation are intricately intertwined. By recognizing the cultural significance of the environment and integrating traditional practices with modern approaches, India can strike a balance between development and sustainability. Education, community engagement, policy reforms, and promoting innovation are key steps towards a greener and culturally sensitive future. Embracing these solutions will not only preserve India's rich cultural heritage but also ensure the well-being of its people and the longevity of its natural resources for generations to come

BHANUDEO PRASAD SINGH
Principal
BSA Mahila Mahavidyalaya
Pathna, Barharwa
SKM University, Dumka

Pollution: A Global Crisis That Demands Urgent Action

In today's interconnected world, pollution has emerged as a grave global crisis, impacting every corner of the planet. From the air we breathe to the water we drink and the land we inhabit, pollution poses a significant threat to human health, biodiversity, and the overall well-being of our planet. It is a crisis that demands immediate and concerted action from individuals, communities, governments, and industries worldwide. This article will explore the various forms of pollution, their consequences, and the urgent actions needed to address this crisis.

AIR POLLUTION: A SILENT KILLER

One of the most pressing forms of pollution is air pollution. The burning of fossil fuels, industrial emissions, and transportation exhaust release harmful pollutants such asparticulate matter, nitrogen oxides, and volatile organic compounds into the atmosphere. These pollutants not only contribute to climate change but also have severe health implications. According to the World Health Organization (WHO), air pollution is responsible for millions of premature deaths each year, primarily due to respiratory and cardiovascular diseases. Urgent measures must be taken to transition towards cleaner energy sources, promote sustainable transportation, and enforce stricter emission standards to combat air pollution.

WATER POLLUTION: THREATS TO LIFE AND ECOSYSTEMS

Water pollution is another critical issue that requires immediate attention. Industrial waste, agricultural runoff, and improper disposal of chemicals contaminate rivers, lakes, and oceans, endangering aquatic life and jeopardizing our own access to safe drinking water. The presence of pollutants such as heavy metals, pesticides, and plastics in water bodies not only affects biodiversity but also poses serious health risks to humans. Efforts should focus on

adopting sustainable farming practices, implementing effective wastewater treatment systems, and raising awareness about the importance of water conservation and responsible waste management to tackle water pollution.

LAND POLLUTION: A TICKING TIME BOMB

Land pollution, caused by improper waste disposal and excessive use of plastics, has devastating consequences for ecosystems and human health. Improper waste management leads to the accumulation of hazardous materials in landfills, contaminating soil and groundwater. Plastic pollution, in particular, poses a significant threat to marine life, with millions of tons of plastic waste ending up in our oceans each year. The long-lasting effects of plastic pollution not only harm marine animals but also enter our food chain, ultimately affecting human health. It is high time we adopt a circular economy approach, emphasizing recycling, reducing single-use plastics, and promoting sustainable packaging alternatives. Furthermore, stricter regulations and enforcement are needed to ensure responsible waste disposal practices and encourage the development of innovative solutions.

THE SOCIOECONOMIC IMPACTS OF POLLUTION

The impacts of pollution are not limited to the environment alone; they also have far-reaching socioeconomic consequences. Pollution disproportionately affects marginalized communities, exacerbating existing inequalities. Developing countries often bear the brunt of pollution-related health issues and environmental degradation, impeding their social and economic development. Addressing pollution requires a collaborative approach, where developed nations provide support and resources to aid in the implementation of cleaner technologies and sustainable practices worldwide. International cooperation, financial assistance, and technology transfer are essential to ensure that the burden of pollution is shared equitably and that the most vulnerable populations are not left behind.

THE ROLE OF EDUCATION AND AWARENESS

Education and awareness play a vital role in combating pollution. Governments, educational institutions, and non-profit organizations must prioritize environmental education, empowering individuals with the knowledge and tools to make sustainable choices in their daily lives. By fostering a sense of environmental responsibility from an early age, we can cultivate a generation of

environmentally conscious citizens who will strive to protect and restore our planet. Awareness campaigns, public outreach programs, and media engagement are crucial to disseminating information about pollution and inspiring collective action.

THE WAY FORWARD

Time is of the essence. The crisis of pollution demands urgent action. Governments and industries must invest in cleaner technologies, incentivize sustainable practices, and enforce stringent regulations. Transitioning to renewable energy sources, improving energy efficiency, and promoting green transportation are key steps towards reducing air pollution. Investing in wastewater treatment infrastructure, implementing pollution control measures, and adopting sustainable agricultural practices are necessary to combat water pollution. Additionally, promoting waste reduction, encouraging recycling,and implementing plastic waste management strategies are crucial in tackling land pollution.

Individuals also have a crucial role to play. Each person can contribute by making conscious choices to reduce their carbon footprint, conserve resources, and support businesses that prioritize environmental sustainability. Small actions, such as using public transportation, reducing energy consumption, recycling, and participating in community clean-up initiatives, can collectively make a significant difference.

Together, we can make a difference and create a cleaner, healthier, and more sustainable future for all. Collaboration between governments, industries, civil society organizations, and individuals is essential to address the global crisis of pollution. By taking immediate and decisive action, we can mitigate the impacts of pollution, protect human health, safeguard biodiversity, and ensure a sustainable planet for future generations.

In conclusion, pollution is a global crisis that affects us all. It threatens our health, ecosystems, and the very existence of countless species. The time to act is now. Let us join forces, take decisive action, and work towards a pollution-free world. Our collective future depends on it.

Mr. Kishore Kumar Ghosh
Asstt. Professor in English
BSA Mahila Mahavidyalaya
Pathna, Barharwa
SKM University, Dumka

IMPORTANCE OF ENVIRONMENT

An Environment is everything that is around us which includes both living and non-living things such as water, animals, birds, plants, air, climate and all the natural resources etc. Life cannot be imagined without environment. Food security is dependent on forests/trees. Approximately 75% of the world's accessible freshwater for agriculture, domestic, industrial and environment comes from forests. A Large number of the world's cities depend on forested watersheds for their water supply.

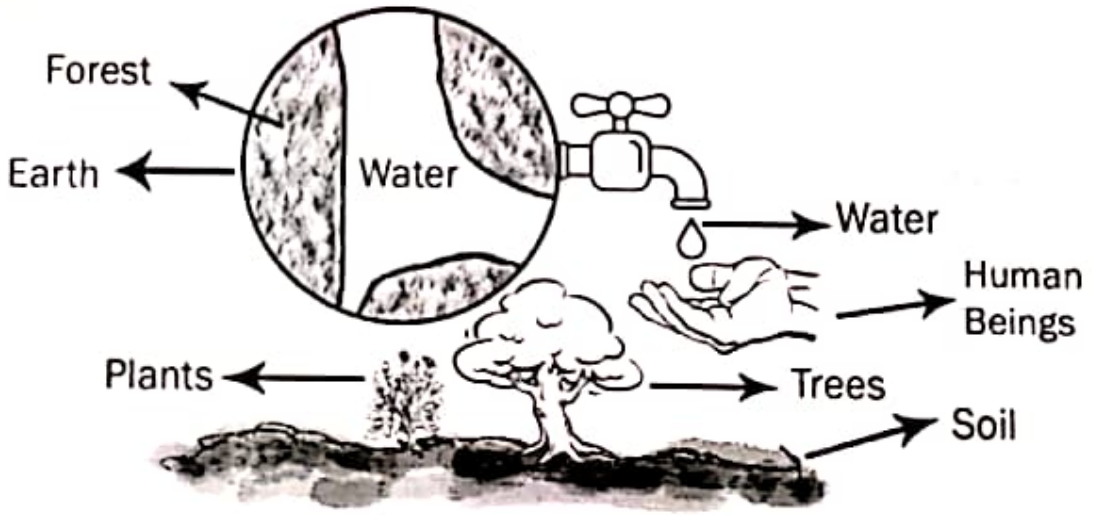

Forest and trees are essential to maintaining production system and ecosystems. Environment is providing high quality of water resources. It contributes to cloud and rainformation.

But due to reforestation, it weakens this process. Cutting trees and forest fires started to lead irregular rainfall. Started to bad effect the environment. Today environmental management is essential. For this many international conferences are taking place in environmental agenda.

प्रो0 बासुदेव साहा
प्रा0 इतिहास विभाग
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना, बडहरवा

पर्यावरण

Environment शब्द फ्रेंच भाषा के Environner शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है–घिरा हुआ था घेरता है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम–1986 के अनुसार पर्यावरण किसी जीव के चारों, घिरी भौतिक एवं जीवक दशाओं एवं उनके साथ अंतः क्रिया को सम्मलित करता है। पर्यावरण का आशय जैविक एवं अजैविक घटकों एवं उनके आस–पास के वातावरण सम्मलित रूप से है, जो पृथ्वी पर जीवन के आधार को संभव बनाता है। अतः पर्यावरण एक प्रकृतिक परिवेश है जो पृथ्वी पर जीवन को विकसित, पोषित एवं समाप्त होने में मदद करता है। **पर्यावरण दो प्रकार का होता है– प्राकृतिक या भौतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण और मानव निर्मित पर्यावरण।**

प्रकृतिक पर्यावरण में पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवीय एवं अजीबीय दोनो को सम्मिलित किया जाता है। भूमि, जल, वायु पेड़ पौधे एवं जैवमंडल आदि भी प्राकृतिक पर्यावरण के अतंर्गत आते हैं। मानव निर्मित पर्यावरण के अन्तर्गत वे सभी स्थान सम्मलित है जो मानव ने कृत्रिम रूप निर्मित किए हैं अतः कृषि क्षेत्र, औद्यौगिक शहर, वायुयान, अंतरिक्ष स्टेशन आदि। किसी के जीवन के लिए पर्यावरण का बहुत महत्व है, क्योंकि पृथ्वी पर जीवन पर्यावरण के कारण ही संभव हो पाया है। समस्त मनुष्य जीव–जन्तु प्रकृति वनस्पति, पेड–पौधे, मौसम, जलवायु आदि पर्यावरण के अन्तर्गत ही आते है। पर्यावरण सिर्फ जलवायु संतुलन बनाए रखने के लिये ही नहीं है बल्कि जीवन के लिए आवश्यक सभी वस्तुएँ भी उपलब्ध कराता है।

पर्यावरण का महत्व समझते हुए हमें अपने भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए पर्यावरण का दोहन करने से बचना चाहिए। जैविक और अजैविक तत्वों के योग को पर्यावरण कहते हैं। जैव विविधता, प्राकृतिक वास तथा ऊर्जा किसी पर्यावरण के मुख्य तथ्य होते हैं, एक पर्यावरण में स्थान और समय के अनुसार परिवर्तन होता रहता है पर्यावरण अपने जैविक पदार्थों का

उत्पादन करता है जो विभिन्न स्थानों पर अलग– अलग होता है। पर्यावरण स्वयंपूर्ति एवं स्वनियंत्रित प्रणाली पर आधारित होता है। पर्यावरण में परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर होती रहती है। पर्यावरण में क्षैत्रिय विविधता पायी आती है।

पर्यावरण दिवस, 05 जून को मनाया आता है पर्यावरण दिवस मनाने की घोषणा 5 जून 1972 को संयुक्त राष्ट्र ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागरुकता, लाने हेतु किया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में 05 जून 16 जून 1972 तक चर्चा हुई। इसके 2 वर्ष के पश्चात 05 जून 1974 को पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया।

PROF- PUNAM SINGH
DEPT. OF ECONOMICS
BSAMM, PATHNA (SBG)

प्रदूषण- वैश्विक संकट

पर्यावरण में फैला प्रदूषण धीरे–धीरे वैश्विक संकट बनते जा रहा है। वर्तमान में पूरे विश्व के मनुष्य के सामने भयानक पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो गया है । कारण मनुष्य अपने स्वार्थ और लालसा को पूरा करने के लिए पर्यावरण के संसाधनों का बेदर्द होकर अतिक्रमण व शोषण कर रहे हैं।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुका है जिसकी चपेट में पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीव जंतु और अन्य निर्जीव पदार्थ भी आ गए हैं, जीव जंतु की कई प्रजातियाँ तो विलुप्त हो गई है और हमारी जीवन प्रणाली कुछ इस प्रकार हो गई है कि हमें पैसा और तरक्की के अलावा कुछ और दिखाई नहीं देता ।

विश्व के हर देश को आर्थिक विकास करना है, विकास की आधुनिक धारणाओं को अपनाने के अलावे हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, लेकिन हमें सुनिश्चित करना होगा कि इन विकास पद्धतियों से पर्यावरण संतुलन हो क्षति नहीं पहुंच पाए, क्योंकि इसके परिणाम घातक होते चले जाएंगे।

इस प्रकार पर्यावरण संतुलन बनाए रखना विश्व स्तर पर सारे देशों का एक कर्तव्य है, जिसे लगभग सभी देश विश्वसनीया ढंग से निभा रही है। फिर भी सचेत रहने की आवश्यकता है कि पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग उचित समय पर, उचित रीति से तथा उचित मात्रा में विवेकपूर्ण एवं योजनाबद्ध रीति से किया जाए, ताकि संसाधन वर्तमान एवं भविष्य दोनों की जरूरतों को पूरा कर सके

अंततः पर्यावरण संरक्षण कर प्रदूषण दूर कर आर्थिक विकास को गति देने के लिए वैश्विक स्तर पर UNO को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए ।

धन्यवाद् ।

प्रोफेसर प्रदीप कुमार भगत
श्रम एवं समाज कल्याण विभाग
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना बरहरवा

CAREER OPPORTUNITES THROUGH SKILL DEVELOPMENT

स्किल किसी कार्य को ठीक से करने की क्षमता को कहते हैं । भारत के सुपरपावर बनने के लिए युवाओं में इस क्षमता का होना अति आवश्यक है । कम कौशल गरीबी और असमानता को कायम रखते हैं । सही ढंग से किए जाने पर कौशल विकास दर और अन्य रोजगार को कम कर सकता है, उत्पादकता बढ़ा सकता है ।

कौशल विकास पढ़ाई के साथ ही क्यों होना चाहिए ?

अपने युवाओं को हम जब तक 21वीं सदी की जरूरतों के अनुसार आवश्यक कौशल से मुक्त नहीं करेंगे तब तक कौशल की मौजूदा कमी भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पटल को प्रभावित करता है ।

KAUSHAL SKILL कौशल शिक्षा

बढ़ती हुई जनसंख्या और उन्हें रोजगार से जोड़ने के लिए यदि प्रारंभिक स्तर के छात्रों को जागृत करके उन्हें चरण दर चरण कौशल के लिए शिक्षा EDUCATION FOR SKILL कार्यक्रम से जोड़ा जाए तो माध्यमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक की उनकी शिक्षा एक तरह कौशल के लिए शिक्षा होगी जो उन्हें रोजगारपरक बनाता है इस तरह की शिक्षा भविष्य में बेरोजगारी की समस्या की एक रचनात्मक तल है और हमारे समाज की खुशहाली का तरीका है । शिक्षा इंसान को जीवन जीने की कला सिखाती है लेकिन इसके साथ शिक्षा छात्रों को कुशल भी बनाती है या कुशलता भविष्य में उन्हें सीधे तौर से जोड़ती है द्य कई शिक्षाविदों ने भी कुशलता आधारित शिक्षा पर बल दिया है । वोकेशनल एजुकेशन आवश्यकशहै द्य रोजगारपरक स्किल योजना को निखारने वाली कुशलता को बढ़ाने वाली शिक्षा की आवश्यकता भारत जैसे देश में है ।

आज के तकनीकी और मशीनी युग में कई ऐसे रोजगारपरक स्किल (EDUCATION SKILL) है जो माध्यमिक स्तर पर बच्चे को पारंपरिक विषयों के साथ उन्हें सिखाना आवश्यक है अन्यथा के भावी जीवन के रोजगार की दौड़ में पीछे रह जाएंगे ।

हमारे देश में 70% जनसंख्या रोजगारपरक के जरिए ही अपना जीवन यापन करती है । बुटिक स्किल, ब्यूटी पार्लर, कंप्यूटर आधारित जॉब वर्क, पाककला, ऑनलाइन लेखन अनुवाद कार्य इत्यादि कार्य करती है । इस तरह के कई रोजगारपरक वोकेशनल पाठ्यक्रम है जो जीवन में धन उपार्जन करने हेतु आवश्यक है ।

भारत सरकार ने भी हमेशा राष्ट्रीय विकास के लिए कौशल विकास पर जोर दिया जाता है और रोजगार का सृजन करने के लिए अनेक ठोस कदम उठाए हैं। तो हम कह सकते हैं कि भविष्य निर्धारण के लिए स्किल का होना अति आवश्यक है ।

PROF. SYED ANSARUL HAQUE
DEPT OF GEOGRAPHY
BSA Mahila Mahavidyalaya
Pathna, Barharwa
SKM University, Dumka

पर्यावरण और इसका संरक्षण

हमारे चारों तरफ का वह प्राकृतिक आवरण जो हमें सरलता पूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होता है, पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण से हमें हर संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं, जो किसी भी सजीव प्राणी को जीने के लिए आवश्यक है। पर्यावरण से हमें वायु, जल, खाद पदार्थ, अनुकूल वातावरण आदि उपहार स्वरूप प्राप्त होता है । मानव (जीवित प्राणी) प्राचीन काल से वर्तमान काल तक पर्यावरण के साधनों का भरपूर इस्तेमाल किया है। और आज हमारे इतना विकास कर पाने के पीछे भी पर्यावरण का सबसे बड़ा योगदान रहा है ।

पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण के वास्तविकता को बनाए रखना होगा। पूरे ब्रह्मांड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिसमें प्राणी या जीवन मौजूद है। पर्यावरण के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है क्यूंकि जीवन के अस्तित्व का आधार पर्यावरण है ।

पर्यावरण का संरक्षण–

वर्तमान समय में पृथ्वी के चारों ओर कोहराम मचा हुआ है, कि पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। यदि यही गति से पर्यावरण में असंतुलन होता रहा तो संपूर्ण मानव जीवन या प्राणी जगत संकट में पड़ जाएगा। इसलिए हमें पर्यावरण के प्रति जागरूक होना होगा । मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण विनाश करता है, जिसके कारण भविष्य में अनेक परेशानियां व दुष्परिणाम भुगतना पड़ेगा । समाज के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तथा उपयोग अवश्य होना चाहिए, किंतु जहां तक संभव हो सके पर्यावरण की गुणवत्ता पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने का प्रयास किया जाना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्न तथ्यों में ध्यान देना आवश्यक है, :–

1. पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले कारकों को रोकना ताकि मानव स्वाथ्य पर प्रतिकूल प्रभाव ना पड़े।
2. विनाशरहित विकास के उपाय सोचना चाहिए ।
3. जैविक एवं अजैविक संसाधनों का उपयोग नियंत्रित, विवेकपूर्ण हो ।
4. संसाधनों का उपयोग ऐसा किया जाए ताकि उनका नवीनीकरण हो ।
5. पुनः चक्रीकरण में बाधा उत्पन्न करने वाली क्रियाओं पर निश्चित क्षेत्रों में प्रतिबंध करना ।

जल संरक्षण–

पृथ्वी के धरातल पर जीवन के अरितत्व को बनाए रखने के लिए जल का संरक्षण और बचाव बहुत ही जरुरी होता है क्योंकि जल के बिना जीवन संभव नहीं है। पूरे ब्रह्मांड में एक अपवाद के रूप में पृथ्वी पर जीवन चक्र को जारी रखने का काम जल ही करता है। पृथ्वी ही एक ऐसे ग्रह है जहां पानी और जीवन दोनों मौजूद है।

पृथ्वी पर जीवन को संतुलित करने के लिए धरातल पर विभिन्न माध्यमों के द्वारा जल संरक्षण ही जल बचाना है। धरती पर सुरक्षित पीने का पानी के बहुत कम प्रतिशत है। इसी जल को संरक्षण के लिए लिए हम लोगों को जल बचाओ अभियान अत्यंत आवश्यक हो चुका है। औद्योगिक क्षेत्रों से कचड़ों की वजह से रोजाना नदी का पानी बड़ी मात्रा में प्रदूषित हो रहे हैं। जल को बचाने में अधिक कार्यक्षमता लाने के लिए हम लोगों को सभी औद्योगिक क्षेत्रों बिल्डिंग अपार्टमेंट विद्यालय आदि स्थानों पर अधिक से अधिक मात्रा में जल को सुरक्षित रखने के लिए उचित व्यवस्था की जाना चाहिए। पीने का पानी या साधारण पानी की कमी के कारण होने वाली संभावित समस्या के बारे में आम लोगों को जानने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाना चाहिए।

Prof Bina Kumari Chourasia
Dept of Sociology
BSA Mahila Mahavidyalaya
Pathna, Batharwa, Sahibganj

पर्यावरण एक झलक

पर्यावरण एक वृहत एवम् जटिल अवधारना है जिसका तात्पर्य पृथ्वी पर उन सभी घटकों, स्थितियों और दशाओं से है जो क्षेत्र के चारो ओर विद्यमान रहती है और अपने प्रभाव से क्षेत्र अथवा वस्तु को प्रभावित करती रहती है। मूल रूप से ये प्राकृतिक तत्व हैं जो पृथ्वी पर निवास करने वाले प्रत्येक जीव–जन्तु, पेड़, पौधे, सुक्ष्मतम जीवों आदि के क्रियाकलापों उनके प्रत्येक गतिविधियों पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ते हैं। इन प्राकृतिक तत्वों के अन्तर्गत मूल रूप से तीन संघटक हैं जिसे क्रमशः भौतिक संघटक, जैविक संघटक एवं उर्जा संघटक कहते हैं। इन्हीं तीनों संघटको के उपर ही पर्यावरण की दशा और दिशा निर्भर करती है।

भौतिक संघटक के अन्तर्गत पृथ्वी के गोले पर देश की स्थिति से है जिसपर देश की समृद्धि एवम् विकास निर्भर करती है। साथ ही स्थल मंडल, जल मंडल, वायुमंडल, सूर्यताप, जलवायु आदि इसके अंतर्गत आते है। जैविक संघटक के अन्तर्गत मानव सहित विविध जीव–जन्तु, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और अन्य सुक्ष्मतर जीव आते है ये सभी परपोषी होते है अर्थात इन सबका जीवन पेड़–पौधे और वनस्पति पर ही निर्भर रहता है।

पर्यावरण के ऊर्जा अति महत्वपूर्ण घटक है जिसका स्त्रोत "सौर ऊर्जा" है। इसी कारण धरातल पर पवन संचार, वाष्पीकरण, समुदी धाराओं के प्रवाह, मिट्टी की उर्वरता, मौसम एवं जलवायु का अविर्भाव आदि का प्रवाहमान एवम् कार्यशील है।

प्रकृति द्वारा प्रदत्त से सभी स्वतंत्र वस्तुएँ ही प्राकृतिक साधन है जो निशुल्क उपहार है। विविध रूप में प्राप्त ये उपहार मानव सभ्यता एवं सम्पूर्ण जैविक सभ्यता के विकास और समृद्धि के लिए अत्यधिक आवश्यक है। इन तमाम संसाधनों का मानव अपनी बुद्धि, श्रम, तकनीकी कौशल द्वारा अपनी आवश्यकता के अनुरूप संसोधन परिवर्तन एवम् परिष्कृत करके अधिक उपयोगी बनाकर उसके अभिमूल्यन के वृद्धि करता है।

यद्यपि ये तमाम संसाधन निःशुल्क उपहार है, जो विविध रूपों में उपलब्ध है, फिर भी इन सबकी भी एक मर्यादा है : प्राचीन काल से मनुष्य इनका दोहन करते आ रहे है अनावश्यक रूप से दोहन एवम् उद्देश्यहीन क्रियाकलापो के कारण हमारी पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहे है, अत्यधिक वनों को काटना भू गर्भ जल का दोहन पशु–पक्षी, जीव–जन्तुओ का अनावश्यक शिकार के कारण जैव विविधता पर संकट गहराता जा रहा है।

पर्यावरण को उचित मानक पर रखने हेतु आवश्यक है कि इसके तमाम संघटकों में संतुलन बना रहे, जो नहीं हो सकने के कारण आज जीवनदायिनी अपने विनाशकारी रूप में प्रकट होते जा रही है।

पृथ्वी पर एकमात्र विवेकशील प्राणी के रूप में मनुष्य की प्रतिष्ठा है। इस कारण हम सब का यह अति महत्वपूर्ण दायित्व बनता है कि पर्यावरण की सुरक्षा हर हाल में करें आनेवाली संतति का भविष्य अंधकारपूर्ण न हो सके। इस महान संकल्प को हम सब मिलकर आगे बढाते रहे ताकि जीवन रक्षिणी पर्यावरण लगातार निःशुल्क अमृत की वर्षा करती रहे।

प्रो० ग्लोरिया यू हंसदा
गृह विज्ञान विभाग
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना, बडहरवा

पर्यावरण और जल संरक्षण

पर्यावरण संरक्षण समाज के हर वर्ग तथा हर नागरिक की जिम्मेदारी है तभी हम पर्यावरण को वर्तमान और भविष्य के लिए संरक्षित कर पायेंगें। प्रत्येक वर्ष जुलाई माह में वन महोत्सव मनाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि हरियाली बढ़े और वातावरण शुद्ध हो और पर्यावरण को संरक्षित करे पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारों और के वातावरण को संरक्षित करें और उसे जीवन के अनुकूल बनाएं। पूरे विश्व में प्रत्येक वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।

जल ही जीवन है लेकिन कई लोग जल की महत्ता को बिना समझे ना जाने कितना लीटर पानी यूँ ही बर्बाद कर देते है पृथ्वी पर होने वाली सभी वनस्पतियों से हमे पानी मिलता है पानी प्रकृति की देन है इसीलिए हमें प्राकृतिक संसाधन को दूषित नहीं होने देना चाहिए और ना ही बर्बाद करना चाहिए। हमें अपने ही भूजल संसाधन को बढ़ाने में प्रकृति से सहयोग करें। जल संरक्षण के लिए अपने प्रतिदिन की गतिविधियों में कुछ सकारात्मक बदलाव करने की जरूरत है। लोगों का एक छोट सा प्रयास जलसंरक्षण अभियान की ओर बढ़ा सकारात्मक परिणाम दे सकते है।

प्राचिन काल में भारत में वनों का विस्तार पर्याप्त क्षेत्रफल में था परंतु जनसंख्या के बढ़ते द के फलस्वरूप वनों का विनाश किया गया। वन हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कम हमें शुद्ध ऑक्सीजन शुद्ध वायु जल फिल्ट्रेशन, मृदा नमी, वनस्पति एवं जीव विविधता जैसे कई आवश्यक सेवाएं प्रदान करता है। Co_2 एक गीन हाउस जो ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करती है को अवशोषित और संग्रह करके पृथ्वी की जलवायु को विनियमित करने में वन महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जल को अवशोषित और संग्रहित करके वन पृथ्वी के जल चक्र को विनियमित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारा दायित्व बनता है कि वनों में पेड़–पौधों को बेवजह काटे नहीं और न आग लगाए बल्कि खाली स्थानों में पेड़ पौधे लगाएं। पेड़ पौधे कार्बन ऑक्साइड Co_2 ग्रहण करते हैं और हमें ऑक्सीजन O_2 प्रदान करते हैं जो हमारे वायुमंडल से संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

प्रदीप कुमार साह
व्याख्याता राजनीतिक विज्ञान
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना, बडहरवा

वन का महत्व

हमारे देश के इतिहास में वनों का बहुत बड़ा महत्व है। मनुष्य जीवन के लिए वन प्रकृति का दिया हुआ एक अमूल्य उपहार है। वन पर्यावरण को संतुलित रखने की कुंजी है। हमारी संस्कृति वन–प्रधान है। प्राचीन काल में हमारे ऋषि–मुनी लोग वन में ही रहते थे। हमारे पूर्वज वनों का महत्व समझते थे। इसलिए वे वनों को अपने जीवन का एक आवश्यक अंग मानते थे। वे तरूओं की पूजा करते थे और उनका पालन करते थे। हमारे सारे धर्म ग्रंथों की रचना तरुओं के आश्रम से हुई है। ऋगवेद में तरूओं की महिमा पाई गई है। हमारे पूर्वज तो वृक्षों को देवरूप मानते थे। स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि "वृक्षाणां अस्वत्थोऽहम्" अर्थात् "वृक्षों में मैं पीपल हूँ" आज भी हमारे यहाँ वट, पीपल और आम के वृक्षों की पूजा होती है। स्त्रियाँ इस पूजा में अधिक भाग लेती हैं।

प्राचीन भारत में वनों की कमी नहीं थी पंचवटी, अशोक वन, तपोवन, वृंदावन को हम कैसे मूल सकते है? बुद्ध भगवान को पीपल वृक्ष के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था। कहाँ तक गिनाया जाय हमारी संस्कृति की जो सुंदर मार्ग है, वे वनों की ही देन है।

प्रकृति में वनों का बहुत बड़ा स्थान है। वन जलवायु और जनजीवन दोनों के लिए ही आवश्यक है। पृथ्वी पर मनुष्य के अस्तित्व के लिए वृक्ष आवश्यक है क्योंकि वे ही मिट्टी के प्रमुख रक्षक है। वृक्ष पर्वतों को स्थिर रखते हैं। पवन को ठंढा और शुद्ध रखते है पक्षियों और जानवरों की रक्षा करते है। वन वर्षा के कारण है, वर्षा से अन्न की उत्पत्ति होती है और अन्न से मनुष्य जीवित रहते है। वन भूमि की उर्वरा शक्ति को कायम रखते है। हमें तरह–तरह की जड़ी–बूटियाँ देते है। हमें ईंधन देते हैं। काम के योग्य लकड़ी देते है जिसके बल पर रेल, जहाज आदि चलते है। वृक्षों से ही कागज, दियासलाई गोंद, तरह तरह की दवाईयों और तेलों की उत्पत्ति है। वृक्ष हमें सुन्दर पौष्टिक और स्वादिष्ट फल देते है।

इधर हम वृक्षों के महत्व को आधुनिकता की रंगीनियों में पड़कर भूल गये है। हमलोगों को उचित है कि जहाँ की भूमि अन्न उपजाने लायक नहीं हो, वहाँ वृक्ष लगाये। प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ने इस ओर ध्यान दिया है। सरकार की ओर से प्रतिवर्ष वृक्ष रोपन कार्यक्रम मनाये जाने लगा है। उसमें मजदूरों से लेकर राष्ट्रपति तक भाग लेने लगे है। हमारा यह प्रयास अवश्य ही कल्याणकारी होगा।

प्रोफेसर प्रदीप कुमार भगत
श्रम एवं समाज कल्याण विभाग
बी एस ए महिला महाविद्यालय
पतना बरहरवा

पर्यावरण

पर्यावरण के अंतर्गत पानी, हवा, भूमि, प्रकाश, आग, जंगल, जानवर, पेड़ इत्यादि आते हैं । जो हमारे जीवन तथा जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने में अपना भरपूर योगदान करता है । पर्यावरण के अभाव में हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । हमें अपने भविष्य में जीवन को बचाए रखने के लिए पर्यावरण की सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है । यह तभी हो सकता है जब हर व्यक्ति सामने आए तथा पर्यावरण संरक्षण का हिस्सा बने ।

पृथ्वी पर विभिन्न चक्र है जो नित तौर पर पर्यावरण और जीवित जीवों के मध्य घटित होकर प्रकृति को संतुलन को बनाए रखते हैं जैसे ही ये चक्र बाधित होता है तो निश्चित रूप से मानव जीवन को प्रभावित करता है। आज इस तरह की तकनीक उत्पन्न हुई है जो दिन प्रतिदिन मानव जीवन की संभावना को समाप्त कर रही है। प्राकृतिक हवा पानी मिट्टी इत्यादि दूषित हो रहे है, इससे प्रतीत होता है कि मानव जीवन की समस्या बढ़ने वाली है । अतः इसका प्रभाव मनुष्य जानवर, पेड तथा अन्य जैविक प्राणी दिखने लगा है। कृत्रिम रूप से बाद तथा हानिकारक रसायनों का उपयोग भी उर्वरकता को नष्ट कर रहा है। इससे स्पस्ट है कि इसका प्रभाव हमारे शरीर पर पडता है। औद्योगिक कंपनियों से निकलने वाला हानिकारक गैस हुआ हमारी प्राकृतिक हवा को दूषित करती है तथा इससे हमारे स्वास्थ्य प्रभावित होता है और हम और अस्वस्थ होते हैं । प्राकृतिक स्रोतों में तेजी से कमी का मुख्य कारण है इससे न केवल वन्य जीवों और पेड़ों को भी नुकसान होता है बल्कि यह "इको सिस्टम" को भी बाधित करता है । अब हमें कुछ बुरी आदतों को बदलना होगा तथा दैनिक जीवन में बदलाव लाकर इसे सुधारना है, यह सत्य है कि नष्ट होते पर्यावरण के लिए हमारे द्वारा किया गया प्रयास से बहुत बड़ा सकारात्मक बदलाव आ सकता है। अपने स्वार्थ तथा लाभ के लिए प्राकृतिक संसाधनों का गलत उपयोग नहीं करना होगा तभी सकारात्मक बदलाव संभव है ।

निष्कर्ष :– अब समय आ चुका है कि हम सभी प्राकृतिक संसाधनों का सही एवं विवेक पूर्ण तरह से उपयोग एवं उपभोग करें ताकि हमारा जीवन खुशहाल तथा शांतिप्रिय हो इस बात पर भी हमें जोर देना है कि वैज्ञानिक विकास भविष्य के लिए कोई खतरा ना बने।